जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर
कला, शिक्षा एवं समाज विज्ञान संकाय
आदिवासी अध्ययन केन्द्र

आदिवासी अध्ययन केन्द्र परिचय

आदिवासी अध्ययन केन्द्र में माननीय कुलपति द्वारा मानद निदेशक के रूप में पत्र क्रमांक जेएनवीयू/विकास/2021/2894/दिनांक 20.11.2021 द्वारा डॉ. जनक सिंह मीना को नियुक्त किया जिसके तहत डॉ. जनक सिंह मीना ने इसी दिन कला, शिक्षा एवं समाज विज्ञान संकाय अधिष्ठाता कार्यालय में संस्थापक निदेशक के रूप में कार्यभार ग्रहण कर लिया। इस केन्द्र के संचालन हेतु कला, शिक्षा एवं समाज विज्ञान संकाय अधिष्ठाता द्वारा पत्र क्रमांक 319 दिनांक 22.11.2021 द्वारा कार्यालय स्थल आबंटित कर दिया गया जिसका विधिवत उद्घाटन 03 दिसम्बर 2021 को माननीय कुलपति प्रो. (डॉ.) प्रवीण चन्द्र त्रिवेदी एवं कला संकाय अधिष्ठाता प्रो. (डॉ.) किशोरी लाल रैगर द्वारा किया गया तथा इस अवसर पर कुलपति, कला संकाय अधिष्ठाता एवं निदेशक ,आदिवासी अध्ययन केन्द्र द्वारा व्याखान दिए गए।

आदिवासी अध्ययन केन्द्र द्वारा 3 जनवरी 2022 को आदिवासी पुरोधा डॉ. जसपाल सिंह मुण्डा एवं सावित्री बाई फुले की जसन्ती मनाई गई जिसमें कला संकाय अधिष्ठाता प्रो. (डॉ.) किशोरी लाल रैगर , राजनीति विज्ञान विभागाध्यक्ष प्रो. कान्ता कटारिया एवं आदिवासी अध्ययन केन्द्र निदेशक द्वारा व्याख्यान दिए गए। 4 जनवरी 2022 को आदिवासी क्रांतिकारी स्वतंत्रता सेनाानी श्री गणपतराम बगराणिया की पुण्यतिथि मनाई गई जिसमें आदिवासी अध्ययन केन्द्र के निदेशक द्वारा व्याख्यान दिया गया।

अध्ययन केन्द्र की प्रासंगिकता एवं उद्देश्य

भारतीय समाज व्यवस्था में आदिवासी ही यहां का मूलनिवासी है जो सदियों से भारतीय समाज, कला, संस्कृति, पर्यावरण, प्रकृति एवं भाषा जैसी अमूल्य धरोहरों का संरक्षणकर्ता रहा है। भारत की कुल जनसंख्या का 8.6 प्रतिशत तथा राजस्थान का 13.5

प्रतिशत) आदिवासी जनसमुदाय भारत के विभिन्न क्षेत्रों में निवास करता है जो प्रकृति, पर्यावरण, जल, जंगल, जमीन जैसी नैसर्गिक सम्पदाओं को समृद्ध करता रहा है। साथ ही भारत की देशज भाषाएं, जैसे भीली, संथाली, गोंडी, हो, मुंडारी, बोड़ो, मिताई, डोगरी, कुडुख, खड़िया आदि का संरक्षण आदिवासियों द्वारा ही किया जाता रहा है। संथाली एवं बोड़ो आठवीं अनुसूची में सम्मिलित की जा चुकी है। लोक कलाएं यथाः नृत्य, भित्ति चित्र, कबीला नृत्य, संगीत, वादन–गायन, मांडणा आदि तथा लोक गाथाएं, लोक परंपराएं आदि को वाचिक रूप में पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित करता रहा है। आदिवासी समुदाय सहअस्तित्व, सहजीवन, परस्पर समन्वय स्थापित करने वाला सहज स्वभाव का व्यवहारशील मानव है। प्रकृति के समीपस्थ होने से इनका व्यवहार प्रकृति के अनुकूल रहा है अर्थात भौगोलिक, पर्यावरणीय, प्राकृतिक बदलावों के साथ सामंजस्य स्थापित करना, निस्वार्थ भाव से सेवा–सहयोग करना, त्याग आदि इनकी विशिष्टता रही है। आज बदलते परिदृश्य में विश्व के आदिवासियों द्वारा संरक्षित धरोहरों को बचाए रखने की आवश्यकता प्रतीत होती है। सूचना एवं प्रौद्योगिकी, वैश्वीकरण, उदारीकरण एवं निजीकरण के वर्तमान दौर में विशेष रूप से आदिवासी समुदाय पर कई खतरे मंडरा रहे हैं। सरकार की इन्हीं नीतियों के कारण भारत का अधिकांश आदिवासी जनसमुदाय विस्थापन एवं पलायन को मजबूर है। विकास बनाम विस्थापन की अंधी दौड़ में हुए विस्थापन के कारण आदिवासियों की भाषा, साहित्य, संस्कृति, कला, इतिहास आदि सभी विशिष्टताएं विलुप्त हो रही हैं जिन पर अध्ययन एवं अनुसंधान करने की महती आवश्यकता है।

उद्देश्य

- प्रायः देखा गया है कि आदिवासियों के इतिहास एवं राष्ट्रीय अवदान को सदैव नजर अंदाज किया जाता रहा है अथवा गलत तथ्य प्रस्तुत कर यर्थाथता से वंचित रखा गया है। यह अध्ययन केन्द्र आदिवासियों के वास्तविक इतिहास एवं राष्ट्रीय अवदान को दृष्टिपटल पर लाने का प्रयास करेगा।
- अध्ययन केन्द्र की स्थापना से राजस्थान के आदिवासियों से संबंधित विविध आयामों यथा ऐतिहासिक, सामाजिक, शैक्षणिक, आर्थिक, राजनीतिक, प्रशासनिक, साहित्यिक,

लोक कला, संस्कृति आदि की रिक्तताओं को खोजते हुए शोध एवं अध्ययन किया जा सकेगा।

- देश में आदिवासियों की दशा, दिशा और संभावनाओं को तलाशते हुए भारत सरकार एवं राजस्थान सरकार की आदिवासी जनजातियों के कार्यक्रमों एवं योजनाओं का मूल्यांकन करते हुए नीतियों के निर्धारण में यथा संभव सहयोग करेगा।
- देश के विभिन्न भागों में बसे हुए आदिवासियों के लेखन, पत्रकारिता, साहित्यकार एवं लोक कलाकारों की अमूल्य धरोहर का संरक्षण एवं वैज्ञानिक प्रविधि से अनुसंधान करना अध्ययन केन्द्र का उद्देश्य रहेगा।
- वैश्विक परिप्रेक्ष्य में यह देखा गया है कि आदिवासियों का व्यवहार प्रकृति के निकटस्थ रहा है और वे वनस्पति से लेकर जीव–जन्तुओं के व्यवहार को भी भलीभांति समझते हैं। अध्ययन केन्द्र ऐसे प्रत्येक पहलू पर अध्ययन एवं अनुसंधान करेगा जो इनको प्रभावित करते हैं तथा प्रभावित होते हैं।
- अध्ययन केन्द्र आदिवासियों की बोली, भाषा, संस्कृति, चिकित्सा, तकनीक, लोक गीत, नृत्य, वादन, परंपराओं, रीति रिवाजों एवं विभिन्न मान्यताओं के अध्ययन के लिये प्रमाण–पत्र पाठ्यक्रम, डिप्लोमा पाठ्यक्रम संचालित करेगा साथ ही इनसे संबंधित शोध को बढ़ावा दिया जा सकेगा।
- आदिवासी जनजातियों की बोली, भाषा की शब्दावली को वैज्ञानिक तकनीकी शब्दावली आयोग के साथ वस्तुनिष्ठता प्रदान करना। आदिवासियों को जड़ी–बूटियों का भी विशिष्ट ज्ञान पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तान्तरित होता रहा है जो आधुनिकता की अंधी दौड़ में लुप्त प्रायः हो रहा है। इनका विशिष्ट अध्ययन भी यहाँ करवाया जा सकेगा।
- आदिवासियों की प्रतिभाओं को सही दिशा में मार्गदर्शन करना एवं लैंगिक स्थिति का मूल्यांकन करते हुए आदिवासी महिलाओं की विशिष्टताओं को प्रोत्साहित करना तथा प्रचारित करना इसका उद्देश्य होगा।
- आदिवासी साहित्य एवं अनुसंधान को सुदृढ़ करने के लिये आदिवासी विमर्श पर आधारित विशेषज्ञों के व्याख्यान करवाना, संगोष्ठियों, कार्यशालाओं, सम्मेलनों एवं

प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन करना तथा स्तरीय शोध पत्रों को शोध पत्रिका/पुस्तक के रूप में प्रकाशित करना।

- आदिवासियों की जल, जंगल और जमीन की अवधारणा को विकसित करना और आदिवासी विमर्श के विभिन्न पाठ्यक्रम विकसित करते हुए देश के प्रमुख संसाधन केन्द्र के रूप में विकसित करना।
- वैश्वीकरण और आर्थिक उदारीकरण से आदिवासी समुदाय के समक्ष उत्पन्न समकालीन चुनौतियों का अध्ययन करना।
- आदिवासियों को मुख्यधारा से जोडने के लिए शोध आधारित परिणामों की क्रियान्विति के लिए सरकार के सभी स्तरों पर प्रयास करना तथा आधार स्तर पर समाज में जनचेतना का आविर्भाव करना।
- आदिवासी जनजातियों से संबंधित यथा जनजाति मंत्रालय, भारत सरकार एवं राज्य सरकार तथा संस्थानों के साथ समन्वय स्थापित करते हुए वित्त का प्रबंधन करना।

गौरतलब है कि राजस्थान में बांसवाडा में मानगढधाम आदिवासियों का सबसे बडा शहीद स्थल रहा है जहाँ गोविन्द गिरी के नेतृत्व में आन्दोलन हुआ और बडी संख्या में आदिवासी शहीद हुए थे जिनको आज तक इतिहास में दर्ज नहीं किया अथवा वास्तविक आंकडों से परे होकर बात की गई । राजस्थान में आदिवासी भाषा, कला, संस्कृति, इतिहास आदि के संरक्षण में विशिष्ट आदिवासी हस्तियों, लिम्बा राम (तीरंदाजी), कर्णा भील (नड़ वादक), तग्गा राम जी (अलगोजा वादन), सुरता राम (रावण हत्था), राणा पुंजा भील (महान स्वतंत्रता सेनानी), मोतीलाल तेजावत आदि ने राजस्थान का गौरव बढ़ाने में अद्वितीय योगदान दिया है, जिन्हें आज की युवा पीढ़ी विस्मृत करती जा रही है। ऐसी महान हस्तियों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व आदि के संरक्षण में भी अध्ययन केन्द्र का योगदान रहेगा।

डॉ. जनक सिंह मीना